5

विश्वास की पसन्द (1:16-18)

जर्मन लोगों के लिए 1983 का वर्ष बड़ा ही अजीब रहा होगा। उस वर्ष के दौरान ऐतिहासिक महत्व के दो महत्वपूर्ण लोगों का जन्मदिन मनाया गया था। चाहे जीवन के दोनों के दर्शन अलग-अलग थे। उस वर्ष मार्टिन लूथर के जन्म की पांच सौवीं वर्षगांठ थी और कार्लमार्क्स के जन्म की सौंवी वर्षगांठ। मार्क्स समाजवाद का जन्मदाता है। इसके विकास से कई लोगों की मानवीय आत्मा (और कई बार देह) को कैद मिली। सुधारवादी लहर के अगुवे लूथर ने लोगों को मध्यकाल के कैथोलिकवाद से धार्मिक स्वतन्त्रता में अगुआई दी।

हमारे संसार में हम दो अलग-अलग विचारधाराओं को काम करते हुए देखते हैं। अंधकार के राजकुमार की शक्ति अक्सर लोगों को पाप की दासता में बुरी तरह से फुसला लेती है, परन्तु यीशु मसीह का सुसमाचार उसके लहू के द्वारा लोगों को स्वतन्त्र करता है। एक तो मनुष्य को गिराने का काम करता है, जबकि दूसरा मनुष्य को बचाने का काम करता है।

याकूब को मालूम है कि उसे इन दो प्रतिस्पर्धी जीवन शैलियों में से एक को चुनने का निर्णय लेना पड़ेगा। परमेश्वर के प्रेरणा से उसे मालूम है कि बेहतर कौन सा है। वह हमें सही निर्णय लेने के लिए प्रभावित करने का प्रयास कर रहा है। वह चाहता है कि हम विश्वास को अपनी पसन्द बनाएं।

धोखे का सामना करने की पसन्द (1:16)

याकूब धोखे में न फंसने की चेतावनी देते हुए हमें निर्णय लेने में सहायता करता है (1:16)। हम फौरन पूछते हैं, ''हमने किस बात में धोखा खाया?'' पिछली आयतों से दो काम लिए जा सकते हैं: बाहरी परीक्षाओं का उद्देश्य (1:2-4) और भीतरी परीक्षा का स्रोत (1:13-15)। पर ऐसा लगा कैसे याकूब उसी बात की ओर बढ़ रहा है, जो वह कहने वाला है। वचन में आम तौर पर धोखा खाने की इस चेतावनी का इस्तेमाल एक महत्वपूर्ण विचार के परिचय के रूप में किया गया है (1 कुरिन्थियों 6:9, 10; गलातियों 6:7, 8)।

इस वचन में से सबसे महत्वपूर्ण विचारों में से एक यह समझ आना चाहिए कि धोखा खाने से बचने की चेतावनी ''प्रिय भाइयों'' के लिए है। शैतान किसी विश्वास को धोखा देने के लिए इतनी मेहनत करेगा जितनी किसी दूसरे के लिए नहीं। मसीही लोग गलत निर्णय ले सकते हैं यानी वे धोखा खा सकते हैं।

परमेश्वर की भलाई को पहचानने की पसन्द (1:17)

हमें इस विश्वास में धोखे में नहीं रहना चाहिए कि शैतान के पीछे चलने के बाद परीक्षा में फंसना हमारे लिए कुछ भलाई ही पैदा करेगा। हम यह जान सकते हैं क्योंकि ''हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है,

जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल-बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है'' (1:17)। हमें यह भी समझना चाहिए कि यह याकूब की पहली बात पर ही ज़ोर देता है। क्योंकि अच्छी चीज़ें केवल परमेश्वर देता है, और वह विनाशकारी परीक्षा नहीं दे सकता जैसा आयत 13 में बताया गया है। जो कुछ परमेश्वर देता है, उसे करुणा और सहायतापूर्ण ढंग से लिया जाता है।

इस बात से परिपूर्ण कि वह क्या कर सकता है आदमी अक्सर परमेश्वर को तस्वीर में से निकालने की कोशिश करता है। वह टाइलर, टैक्सस के रोज़गार्डन की सुन्दरता; टैक्सस हिल कन्ट्री की नीली टोपियां; मुस्तोगी, ओक्लाहोमा की एज़ेलियों, या ओज़ार्क पहाड़ों के पत्ते देखने के लिए सैकड़ों मील चला जाएगा। पर लगता नहीं कि उसे यह समझ है कि बिना परमेश्वर के कोई कली, फूल या पत्ता नहीं होगा।

कुछ लोग ''अच्छे'' और ''उत्तम'' दानों के अन्तर करते हुए इस वचन को बहुत अधिक खींच सकते हैं। वे ''अच्छे'' दानों के रूप में उन दानों को देखते हैं, जो सब लोगों को मिले हैं (भोजन, हवा, पानी आदि) और ''उत्तम'' दोनों के रूप में उन आशिषों को देखते हैं, जो उन्हें मिली हैं, जो मसीह में हैं। परमेश्वर द्वारा दिए गए ''दानों'' के विषय में यह भिन्नता सही हो सकती है, परन्तु यह उस प्वायंट से आगे लग सकती है, जो याकूब यहां पर बता रहा था। याकूब हमें दिखाना चाहता है कि परमेश्वर का स्वभाव उसे परीक्षा में सम्मिलित होने से रोकता है (1:13, 17)। इसके अलावा अच्छे और उत्तम दानों का देने वाला केवल परमेश्वर है (1:17)। वह हमें गिराने के लिए या हराने की कोशिश नहीं करता कि एक दिन वह हमें आशीष दे और अगले दिन हमारी परीक्षा ले, ''वह छाया की तरह बादल नहीं'' (1:17; NIV)। परन्तु लगातार वह हमें वह देता रहता है जो अच्छा और उत्तम है। हमारे मनों में यह बात छप जानी चाहिए कि जब हम परमेश्वर का चयन करते हैं तो हम ने उसका चयन किया है, जो सबसे बढ़िया है।

परमेश्वर के अनुग्रह को याद रखने की पसन्द (1:18)

जिस बात को यहां कहा जा रहा है उस पर फिर से ज़ोर देने के लिए याकूब बताता है कि परमेश्वर ने पहले ही हमारे लिए क्या किया है। यह याद करने पर कि परमेश्वर ने उनके लिए पहले ही क्या किया है, निश्चय ही उसका तर्क यह रहा होगा कि विश्वास का मार्ग चुनने का उनका निर्णय आसान हो जाएगा।

याकूब उन तीन कामों की सूची बताता है, जो परमेश्वर ने आज्ञाकारी विश्वासी के लिए किए हैं (1:18)।

पहला, ''उसने चुना'' (NIV)-KJV में इसे और थोड़ा स्पष्ट माना जा सकता है जहां ''उसकी अपनी इच्छा'' है। परमेश्वर ने मन बनाया और जब सब कुछ तैयार था तो उसने मनुष्य के उद्धार की प्रक्रिया आरम्भ की (गलातियों 4:4, 5)। परमेश्वर की इच्छा सदा से रही है कि सब लोगों को उद्धार मिले (इफिसियों 1:4, 5; 1 यूहन्ना 2:2; मत्ती 11:28)। इस बात को छोड़ कि परमेश्वर ने मनुष्य के उद्धार की बात मन में ठानी और इसकी पेशकश की, और कोई कारण नहीं था।

दूसरा, ''सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया।'' बिना किसी संदेह के याकूब ''नये जन्म'' की ही बात कर रहा था (यूहन्ना 3:5; तीतुस 3:5)। यह वह समय है, जब पाप द्वारा शापित

पुराने मनुष्य को यीशु की मृत्यु में दफ़ना दिया जाता है और नया मनुष्य (रोमियों 6:4) जी उठता (जन्म लेता) है। इस नये जन्म की ओर ले जाने और इसकी शिक्षा देने वाला ''सत्य का वचन'' ही है। विलियम बार्कले बड़ी आसानी से कहता है, '' 'सत्य का वचन' सुसमाचार है ...।''[1] यह कथन पवित्र शास्त्र की बात से मेल खाता है (रोमियों 1:16; याकूब 1:21; 1 पतरस 1:23)।

तीसरा, उसने यह सब किया ''ताकि हम उसकी सृष्टि की हुई वस्तुओं में एक प्रकार के प्रथम फल हों।'' पहले दो पड़ाव तीसरे की ओर ध्यान दिलाते हैं। मसीही व्यक्ति परमेश्वर की बनाई हर वस्तु का एक प्रकार का ''पहला फल'' है। फसह के दौरान ''पहले फल'' भेंट किए जाते थे (लैव्यव्यवस्था 23:10; व्यवस्थाविवरण 26:2) क्योंकि वे सबसे बढ़िया होते थे। पुराने नियम की अवधारणा के नये नियम में ले जाई गई और इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल बार-बार हुआ है (1 कुरिन्थियों 15:20; 16:15; प्रकाशितवाक्य 14:4)। याकूब की तरह इस अभिव्यक्ति का इस्तेमाल यहां दोहरा अर्थ देने वाला लगता है। पहले तो यह कहती है कि मसीही व्यक्ति परमेश्वर की सारी सृष्टि का उत्तम भाग है। फिर यह संकेत देती है कि और फल मिलने वाला है।

सारांश

जब हमारा सामना शैतान की परीक्षाओं से होता है तो हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने पहले ही हमारे लिए क्या किया है। हमें ''नये सिरे से पैदा होने'' के लिए ''चुना गया'' था ताकि हम उसकी सारी सृष्टि में प्रथम हों।

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *दि लैटर्स ऑफ़ जेम्स एंड पीटर* (फिलाडेल्फिया, पनामा: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1960), 63.